अलंकार

"काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्म अलंकार कहलाते हैं।"

② प्रकार

शब्दालंकार

↓

जहाँ शब्दों के माध्यम से चमत्कार उत्पन्न किया जाए।

↓

Ex. श्लेष, यमक, अनुप्रास, वीप्सा।

अर्थालंकार

↓

जहाँ अर्थ के माध्यम से चमत्कार उत्पन्न हो।

Ex. उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, संदेह भ्रांतिमान .....

[उपमा अलंकार]

जहाँ पर एक वस्तु की तुलना दूसरी वस्तु से की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है।

<u>or</u>

जहाँ उपमेय की तुलना उपमान से की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है।
इसके चार अंग होते हैं —

उदाहरण — पीपर पात सरिस मन डोला।

उपमेय —
जिसकी तुलना की जाती है।
(मन)

उपमान —
जिससे तुलना की जाती है।
(पीपर पात)

साधारण धर्म —
जिसके कारण उपमेय और उपमान में तुलना दिखायी जाती है।
(डोला)

वाचक शब्द —
वे शब्द जिनसे तुलना प्रकट हो।
(सरिस)

पहचान : —
सरिस, सम, समान, भाँति के जैसे, की तरह, इत्यादि वाचक शब्द होंगे वहाँ उपमा अलंकार होगा।

उदाहरण :—

→ हरि पद कोमल कमल से।

→ मुख मयंक सम मंजु मनोहर।

→ तुम्हारा मुख चंद्र सम है।

→ फूलों सा चेहरा तेरा
कलियों सी मुस्कान है।

रूपक अलंकार

जहाँ उपमेय में उपमान का भेदरहित आरोप हो, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

पहचान — रुपी अर्थ निकलेगा / – लगा होगा।

Ex.-

→ "चरन-कमल बंदौं हरि राई।"

→ "उदित उदयगिरि मंच पर
रघुवर बाल पतंग।"

→ "मन-सागर मनसा लहरि, बूड़े बहे अनेक।।"

→ "शशि-मुख पर घूँघट डाले
अंचल में दीप छिपाए।।"

उत्प्रेक्षा अलंकार

जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना की जाये वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

पहचान — मनु, मानो, जनु, जानो, मानहु, जानहु, मनहु, जनहु, ज्यों आदि शब्द प्रयुक्त होंगे।

उदाहरण —

→ "चमचमात चंचल नयन बिच घूँघट पट झीन।
मानहु सुरसरिता विमल जल उछरत जुग मीन॥"

→ "सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात।
मनहुं नीलमणि शैल पर, आतपु परयो प्रभात॥"

→ "धाये धाम काम सब त्यागी।
मनहु रंक निधि लूटन लागी॥"

→ "चितवनि चारु भृकुटि बर बांकी।
तिलक रेख सोभा जनु चांकी॥"